

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 11 — वृन्दावन-गमन

5 October 2026



अपने बालकों की सुरक्षा के लिए व्रज के गोप अपनी गाड़ियाँ लादकर वृन्दावन की यात्रा करते हैं, आगे-आगे गौएँ चलती हैं और मार्ग में गोपियों कृष्ण की लीलाओं के गीत गाती हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह ग्यारहवाँ अध्याय बाललीलाओं की एक माला पिरोता है। वृक्षों के गिरने का शब्द सुनकर दौड़े आए गोप बालक को ऊखल से बँधा पाते हैं, और नन्द मुस्कुराते हुए उन्हें खोल देते हैं। कृष्ण किसी भी नन्हे बालक की भाँति खेलते हैं, गोपियों के कहने पर नाचते और गाते हैं; एक फलवाली उनकी अंजुली को फलों से भर देती है और उसकी टोकरी रत्नों से भर जाती है; और माता यशोदा अपने थके लालाओं को घर बुलाती हैं। फिर गोकुल में बालकों पर आए अनेक संकटों से चिन्तित होकर बुजुर्ग समस्त व्रज को वृन्दावन के नए वन में ले जाने का निश्चय करते हैं। वहाँ दोनों बालक बछड़े चराने लगते हैं, और वहीं कृष्ण बछड़े के रूप में आए वत्सासुर और विशाल बगुले बकासुर का उद्धार करते हैं — जब तक सारा व्रज यह देखकर आश्चर्यचकित नहीं हो जाता कि गर्ग ऋषि के वचन सत्य हो रहे हैं।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 11 (एकादश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: बाललीलाएँ और वृन्दावन-गमन
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: गोकुल और तत्पश्चात् व्रज में वृन्दावन का वन
- केंद्रीय विषय: कृष्ण का ऊखल से मुक्त होना; उनकी मधुर बाललीलाएँ और फलवाली के रत्न; यशोदा का लालाओं को बुलाना; व्रज का वृन्दावन-गमन; और वत्सासुर तथा बकासुर का वध
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 11, श्लोक 1-59
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

दसवें अध्याय में ऊखल से बँधे बालक कृष्ण दोनों यमलार्जुन वृक्षों के बीच से निकलकर उन्हें उखाड़ देते हैं, और नारद के शाप से वृक्ष बने कुबेर के दो पुत्रों नलकूवर और मणिग्रीव का उद्धार करते हैं। यह अध्याय गोपों के उस भारी शब्द की ओर दौड़ने से आरम्भ होता है, और वृन्दावन-गमन तथा कृष्ण की पहली असुर-वध लीलाओं तक उनके बचपन का अनुसरण करता है।

गिरे वृक्ष और बालक की मुक्ति

वृक्षों के गिरने का भयंकर शब्द सुनकर नन्द और गोप भयभीत होकर वहाँ दौड़े, यह सोचकर कि बिजली गिरी है। वहाँ उन्होंने दोनों विशाल अर्जुन वृक्षों को जड़ से उखड़ा हुआ भूमि पर पड़ा देखा, फिर भी उनके गिरने का कारण न समझ सके। पास खेलते छोटे बालकों ने सच बताया — कि नन्हे लाला ने अपने से बँधे ऊखल को घसीटते हुए वृक्षों के बीच से निकलकर उन्हें गिरा दिया, और उनमें से दो तेजस्वी पुरुष निकले। बड़े लोग यह विश्वास न कर सके कि एक शिशु ऐसे वृक्षों को उखाड़ सकता है, और संशय में पड़े रहे। नन्द ने अपने लाला को अब भी ऊखल से बँधा देखकर आश्चर्य से मुस्कराते हुए उसे प्रेमपूर्वक खोल दिया।



शब्द सुनकर दौड़े आए गोप दोनों विशाल वृक्षों को गिरा और बालक को ऊखल से बँधा हुआ पाते हैं; आश्चर्य और राहत से मुस्कराते हुए नन्द अपने नन्हे लाला को खोल देते हैं (श्लोक 1-6)।

मधुर लीलाएँ और फलवाली के रत्न

ज्यों-ज्यों कृष्ण बड़े हुए, उन्होंने अपनी बाल-क्रीड़ाओं से सारे ब्रज को आनन्दित किया। गोपियों के दुलार से वे कभी नाचते, कभी अचानक गा उठते, कभी कहने पर पीढ़ा या मापने का पात्र उठा लाते — मानो उनके हाथों की एक नन्ही काठ की कठपुतली हों; इस प्रकार परम प्रभु, जो समझ सकते थे उन्हें, अपने भक्तों के वश में होना प्रकट करते थे। एक दिन एक फलवाली अपने फल पुकारती हुई आई। ‘फल लो!’ सुनकर स्वयं समस्त फलों के दाता शिशु प्रभु उत्सुकता से अपनी नन्ही अंजुली में कुछ अन्न बदले में लेकर उसके पास दौड़े। यद्यपि मार्ग में अधिकांश अन्न उनकी नन्ही उँगलियों से गिर गया, फिर भी फलवाली ने प्रेमपूर्वक उनके हाथ फलों से भर दिए; और उसी क्षण उसकी फल की टोकरी रत्नों से भर उठी।

फलविक्रयिणी तस्य च्युतधान्यकरद्वयम् ।

फलैरपूरयद् रत्नैः फलभाण्डमपूरि च ॥ ११ ॥

phala-vikrayinī tasya cyuta-dhānya-kara-dvayam phalair apūrayad ratnaiḥ phala-bhāṇḍam apūri ca

अर्थ: फलवाली ने प्रभु की उन दोनों नन्ही हथेलियों को, जिनसे अन्न प्रायः गिर चुका था, फलों से भर दिया; और उसकी फल की टोकरी रत्नों से भर गई। (स्कन्ध 10, अध्याय 11, श्लोक 11)

यशोदा का लालाओं को बुलाना

एक दिन जब कृष्ण और बलराम अन्य बालकों के साथ नदी के किनारे बहुत देर तक खेलते रहे, तब रोहिणी ने उन्हें भोजन के लिए बुलाया; किन्तु खेल में मग्न दोनों न आए। तब रोहिणी ने यशोदा को भेजा, जिनका अपने लाला के प्रति प्रेम और भी गहरा था। स्नेह से स्तन बहाते हुए यशोदा ने माँ के हृदय की समस्त कोमलता से कृष्ण को पुकारा।

कृष्ण कृष्णारविन्दाक्ष तात एहि स्तनं पिब ।

अलं विहारैः क्षुत्क्षान्तः क्रीडाश्रान्तोऽसि पुत्रक ॥ १५ ॥

kṛṣṇa kṛṣṇāravindākṣa tāta ehi stanam piba alam viharaiḥ kṣut-kṣāntaḥ krīḍā-śrānto 'si putraka

अर्थ: कृष्ण, कृष्ण, कमलनयन! प्यारे लाला, आओ और मेरा स्तनपान करो। खेल बहुत हो गया — तुम भूख से क्लान्त हो और क्रीड़ा से थक गए हो, मेरे नन्हे पुत्र। (स्कन्ध 10, अध्याय 11, श्लोक 15)

उन्होंने स्मरण दिलाया कि आज उनका जन्म-नक्षत्र है, कि उन्हें स्नान करना चाहिए, ब्राह्मणों को गौएँ दान करनी चाहिए, और देखना चाहिए कि उनके सजे-धजे नन्हे साथी कैसे पहले ही स्नान कर अलंकृत हो चुके हैं। समस्त प्राणियों के शिरोमणि को केवल अपना प्यारा लाला मानकर, प्रेम से बँधे मन से यशोदा कृष्ण और बलराम का हाथ पकड़कर उन्हें घर ले गई और उनके स्नान तथा श्रृंगार में लग गई।

वृन्दावन-गमन

इसी बीच गोकुल में बालकों पर आए अनेक भारी उत्पातों और संकटों से चिन्तित बुजुर्ग गोप व्रज के हित पर विचार करने के लिए एकत्र हुए। उनमें बुद्धिमान् बुजुर्ग उपनन्द, जो देश-काल के ज्ञाता और राम-कृष्ण के प्रिय थे, बोले। उन्होंने बालकों द्वारा झेले गए संकटों को गिनाया — बालघातिनी राक्षसी, उलटी गाड़ी, बवंडर-असुर, और अब गिरे वृक्ष — और आग्रह किया कि बालकों के हित में उन्हें गोकुल छोड़ देना चाहिए। उन्होंने एक नए, सुन्दर वन का सुझाव दिया, जो चरागाह, पर्वत और औषधियों से समृद्ध और गौओं तथा गोपों के योग्य था: वृन्दावन नामक वन।

वनं वृन्दावनं नाम पशव्यं नवकाननम् ।

गोपगोपीगवां सेव्यं पुण्याद्रितृणवीरुधम् ॥ २८ ॥

vanam vṛndāvanam nāma paśavyaṁ nava-kānanam gopa-gopī-gavāṁ sevyaṁ puṇyādrī-tṛṇa-vīrudham

अर्थ: वृन्दावन नामक एक वन है, जो गौओं के लिए उत्तम, नवीन काननयुक्त, गोप-गोपियों और गौओं के सेवन योग्य, तथा पवित्र पर्वतों, तृणों और लताओं से भरा हुआ है। (स्कन्ध 10, अध्याय 11, श्लोक 28)

गोप एक स्वर से सहमत हो गए, और उसी दिन उन्होंने अपनी गाड़ियाँ जोत लीं और चल पड़े। गौएँ आगे हाँकी गईं; बुजुर्ग, बालक, स्त्रियाँ और समस्त सामान गाड़ियों पर लाद लिए गए; गोपगण धनुष हाथ में लिए उन्हें घेरे रहे, और शंख-तुरही के महान् घोष के साथ वे अपने पुरोहितों सहित प्रस्थान कर गए। गाड़ियों में बैठी सुन्दर वेशवाली गोपियाँ प्रेम से कृष्ण की लीलाएँ गाती रहीं; और यशोदा तथा रोहिणी एक ही गाड़ी में

कृष्ण और बलराम के साथ, उन्हीं गीतों को सुनने को उत्सुक, बैठी रहीं। सब ऋतुओं में सुखद वृन्दावन में प्रवेश कर उन्होंने अपनी गाड़ियों को अर्धचन्द्राकार खड़ा कर अपना नया निवास बनाया; और वृन्दावन, गोवर्धन पर्वत तथा यमुना के बालुकामय तटों को देखकर राम और कृष्ण को परम आनन्द हुआ।



बालक कृष्ण फल के बदले कुछ अन्न ले जाते हैं; यद्यपि उनकी नन्ही हथेलियों से अन्न गिर जाता है, फिर भी फलवाली उन्हें फलों से भर देती है, और उसकी टोकरी रत्नों से भर उठती है (श्लोक 10-11)।

वत्सासुर-वध

समय के साथ दोनों बालक बछड़ों के रक्षक बन गए, व्रज से अधिक दूर न जाकर अन्य ग्वालबालों के साथ अनेक खेल खेलते — बाँसुरी बजाते, गोफन से फल फेंकते, पैरों की घुँघरुओं को बजाते, और बैलों, पशुओं तथा पक्षियों की नकल करते, मानो वे पूर्णतः साधारण बालक हों। एक दिन जब वे यमुना के तट पर बछड़े चरा रहे थे, तब कृष्ण को मारने के लिए एक असुर बछड़े का रूप धरकर झुंड में मिल गया। कृष्ण ने उसे पहचान लिया, चुपके से बलराम को संकेत किया, और अनजान-से बनकर उसके पास पहुँचे।



जब एक असुर बछड़े का रूप धरकर झुंड में घुसता है, तब कृष्ण उसे पिछले पैरों और पूँछ से पकड़कर घुमाते हैं और कैथ के वृक्ष पर फेंककर उसका अन्त कर देते हैं (श्लोक 41-44)।

गृहीत्वापरपादाभ्यां सहलाङ्गुलमच्युतः ।
भ्रामयित्वा कपित्थाग्रे प्राहिणोद्वतजीवितम् ।
स कपित्थैर्महाकायः पात्यमानैः पपात ह ॥ ४३ ॥



*gṛhītvāpara-pādābhyāṁ saha-lāṅgūlam acyutaḥ bhrāmayitvā kapitthāgre prāhiṇod gata-jīvitam
sa kapitthair mahā-kāyaḥ pātyamānaiḥ papāta ha*

अर्थ: अच्युत भगवान् ने उस असुर को पूँछ सहित पिछले दोनों पैरों से पकड़कर घुमाया और कैथ के वृक्ष की चोटी पर फेंककर उसके प्राण ले लिए; और वह विशाल शरीर कैथों को गिराता हुआ धरती पर गिर पड़ा। (स्कन्ध 10, अध्याय 11, श्लोक 43)

इस पर आश्चर्यचकित बालक 'साधु! साधु!' पुकार उठे, और प्रसन्न देवताओं ने समस्त लोकों के रक्षक उस बालक पर पुष्पों की वर्षा की।

बकासुर-वध

एक अन्य दिन बालक अपने बछड़ों को जल पिलाने एक जलाशय पर ले गए, और बछड़ों के पी लेने पर स्वयं भी जल पिया। वहाँ उन्होंने एक विशाल जीव देखा, मानो कोई टूटा पर्वत-शिखर भूमि पर गिरा हो, और भयभीत हो गए। वह पराक्रमी असुर बकासुर था, जो एक विशाल बगुले के रूप में आया था; अचानक कृष्ण पर झपटकर उसने उन्हें अपनी तीखी चोंच में पकड़कर निगल लिया। कृष्ण को उस विशाल बगुले द्वारा निगला देखकर बलराम और अन्य बालक ऐसे अचेत हो गए जैसे प्राणवायु के बिना इन्द्रियाँ। किन्तु कृष्ण ने उसके कण्ठ को अग्नि की भाँति जलाया, जिससे बगुले ने उन्हें तुरन्त बिना किसी हानि के उगल दिया और क्रोध में पुनः अपनी चोंच से उन पर प्रहार किया।

तमापतन्तं स निगृह्य तुण्डयो-
र्दोर्भ्यां बकं कंससखं सतां पतिः ।
पश्यत्सु बालेषु ददार लीलया
मुदावहो वीरणवद् दिवौकसाम् ॥ ५१ ॥

*tam āpatantaṁ sa nigṛhya tuṇḍayor dorbhyāṁ bakaṁ kaṁsa-sakhaṁ satāṁ patiḥ paśyatsu
bāleṣu dadāra līlayā mudāvaho vīraṇavad divaukasām*

अर्थ: जैसे ही वह बगुला पुनः झपटा, सन्तों के स्वामी ने उसे उसकी चोंच के दोनों भागों से पकड़ लिया, और देखते हुए बालकों के सामने कंस के उस मित्र को तिनके की भाँति सहज ही चीर दिया, जिससे देववासियों को हर्ष हुआ। (स्कन्ध 10, अध्याय 11, श्लोक 51)



विशाल बगुला-असुर बकासुर कृष्ण को निगल लेता है और फिर जलकर उन्हें उगल देता है; जब वह पुनः प्रहार करता है, तब कृष्ण उसकी चोंच पकड़कर उसे तिनके की भाँति सहज ही चीर देते हैं (श्लोक 48-51)।

स्वर्गवासियों ने बकारि कृष्ण पर नन्दन वन की मल्लिका आदि पुष्प बरसाए और दुन्दुभि, शंख तथा स्तुतियों से उनका गुणगान किया; और ग्वालबाल आश्चर्य से भर गए। जैसे इन्द्रियाँ प्राणवायु को पुनः पाती हैं, वैसे ही बगुले के मुख से कृष्ण को वापस पाकर बालकों ने आनन्द से उन्हें गले लगाया, अपने बछड़े इकट्ठे किए और उस लीला को गाते हुए व्रज लौट आए।

व्रज का आश्चर्य

कथा सुनकर गोप और गोपियाँ प्रेम से भरकर कृष्ण को ऐसे प्यासी आँखों से निहारने लगे मानो वे मृत्यु से लौट आए हों। उन्हें आश्चर्य हुआ कि इस एक बालक पर इतनी बार मृत्यु आई, और वे सोचने लगे कि उन्होंने पूर्व में ऐसा कौन-सा अपराध किया था जिससे यह भय आया; फिर भी उन्होंने देखा कि जो भयंकर असुर उन्हें मारने आए, वे स्वयं ही नष्ट हो गए, जैसे पतंगे अग्नि में गिरकर। और उन्हें गर्ग ऋषि के वचन स्मरण हो आए, और वे समझ गए कि वे उनकी आँखों के सामने सत्य हो रहे हैं।

अहो ब्रह्मविदां वाचो नासत्याः सन्ति कर्हिचित् ।

गर्गो यदाह भगवानन्वभावि तथैव तत् ॥ ५७ ॥

aho brahma-vidām vāco nāsatyāḥ santi karhicit gargo yad āha bhagavān anvabhāvi tathaiva tat

अर्थ: अहो! ब्रह्मवेत्ताओं के वचन कभी असत्य नहीं होते! पूज्य गर्ग ने जो कुछ कहा था, वह ठीक वैसा ही घटित हुआ। (स्कन्ध 10, अध्याय 11, श्लोक 57)

इस प्रकार नन्द और गोप, कृष्ण और बलराम की कथाएँ आनन्द से कहते और सुनते हुए, सांसारिक दुःखों का अनुभव तक न करते थे; और यों दोनों बालकों ने ब्रज में अपने बचपन के वर्ष लुका-छिपी, पुल बाँधने, बन्दर-कूद और असंख्य अन्य खेलों में बिताए।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् अपने भक्तों के वश में हो जाते हैं। कृष्ण गोपियों के कहने पर नाचते, गाते और वस्तुएँ ला देते हैं, मानो प्रेममय हाथों की कठपुतली (श्लोक 7-9)। उनकी महिमा इसीलिए ढकी है कि आत्मीय प्रेम उनसे क्रीड़ा कर सके।
2. समस्त फलों के दाता हमारी छोटी भेंट स्वीकार करते हैं। फलवाली कुछ गिरे अन्न के बदले फल देती है और रत्नों की टोकरी पाती है (श्लोक 11)। जो कुछ छोटी वस्तु हम भगवान् को देते हैं, वे उसे असीम रूप में लौटा देते हैं।
3. माँ का प्रेम समस्त के स्वामी को बाँध लेता है। यशोदा समस्त प्राणियों के शिरोमणि को केवल अपना भूखा, थका नन्हा लाला मानकर बुलाती है (श्लोक 14-20)। शुद्ध वात्सल्य उन्हें उनकी महिमा के ज्ञान से भी अधिक दृढ़ता से बाँधता है।
4. बुद्धिमान् परामर्श समाज की रक्षा करता है। विचारशील बुजुर्ग उपनन्द के आग्रह पर वृन्दावन-गमन (श्लोक 21-28) दिखाता है कि सबके हित के लिए विवेकपूर्ण, निःस्वार्थ मार्गदर्शन का कितना मूल्य है।
5. भगवान् अपनों की रक्षा करते हैं; बुराई स्वयं नष्ट होती है। वत्सासुर और बकासुर मारने आते हैं और स्वयं नष्ट हो जाते हैं (श्लोक 41-51)। जो शत्रुभाव से भगवान् पर झपटते हैं वे पतंगे की भाँति अग्नि में भस्म हो जाते हैं, जबकि उनके भक्त सदा सुरक्षित रहते हैं।

एक भक्तिमय चिन्तन

यह अध्याय कोमल और भयंकर के बीच धीरे-धीरे झूलता है, और ऐसा करते हुए हमें अपना जीवन देखना सिखाता है। वही बालक जो फलवाली से अपने हाथ भरवाता है, जो माँ के दूध पिलाने के लिए बुलाने पर दौड़ा आता है, वही एक असुर को वृक्ष पर घुमा देता है और एक राक्षस की चोंच को तिनके की भाँति चीर देता है। संकट पर संकट उन पर आते हैं, और हर बार संकट ही नष्ट होता है। गोपों का व्याकुल प्रश्न — हमने ऐसा क्या किया कि यह भय आया? — वही प्रश्न है जो कठिनाई घेरने पर हम सब पूछते हैं। भागवत का शान्त उत्तर यह है कि जहाँ भगवान् उपस्थित हैं, वहाँ उनके अपनों पर आने वाली भयंकर वस्तुएँ स्वयं ही भस्म हो जाती हैं, जैसे दीपक में पतंगे। हमारा कार्य अपनी चतुराई से हर संकट से बचना नहीं, अपितु नन्द और यशोदा की भाँति भगवान् की कथाएँ कहते-सुनते रहना है, जब तक — जैसा श्लोक कहता है — हमें इस संसार के दुःखों का अनुभव ही न रह जाए।

एक दैनिक भाक्ते-अभ्यास

आज उन गोपों का अनुसरण करें जिन्हें कोई सांसारिक दुःख इसलिए न था क्योंकि वे सदा भगवान् की चर्चा कहते-सुनते रहते थे। कुछ क्षण निकालकर इस अध्याय की कृष्ण की किसी एक बाललीला को पढ़ें या स्मरण करें, और उसे किसी प्रियजन से बाँटें, जैसे ब्रज के बालक जो देखा उसे बताने घर दौड़ पड़ते थे। और जब भय या चिन्ता आप पर दबाव डाले, तब स्मरण करें कि भयंकर असुर पतंगे की भाँति अग्नि में भस्म हो गए जबकि ब्रज का बालक अछूता रहा। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

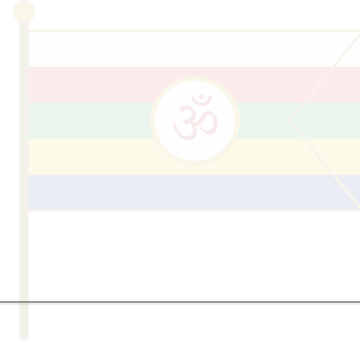
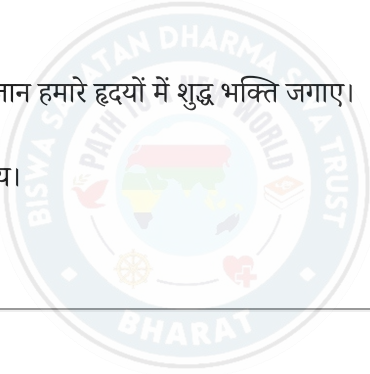
उपसंहार

दशम स्कन्ध का यह ग्यारहवाँ अध्याय हमें गोकुल के आँगन से वृन्दावन के नए वन तक ले जाता है, और कृष्ण की मधुरतम तथा वीरतम बाललीलाओं को एक साथ पिरोता है। वे ऊखल से मुक्त होते हैं, गोपियों के कहने पर नाचते हैं, फलवाली की टोकरी रत्नों से भर देते हैं, और माँ के बुलाने पर घर आते हैं; और जब बुजुर्ग, बालकों की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए, समस्त ब्रज को वृन्दावन ले जाते हैं, तब वे बछड़ों के रक्षक बनकर बड़े होते हैं और उन्हें नष्ट करने आए वत्सासुर तथा बकासुर का उद्धार करते हैं। इन सबके बीच संकट स्वयं पर पलट जाता है और ऋषियों के वचन सत्य सिद्ध होते हैं, जबकि नन्द और गोप, उनकी कथाओं में डूबे, वह आनन्द चखते हैं जो संसार नहीं दे सकता। हम भी भगवान् के स्मरण में इतने पूर्णतः निवास करना सीखें कि इस संसार के भय हम पर अपना बल खो दें, और जो छोटी-सी वस्तु हम उन्हें अर्पित करें वह रत्नों की टोकरी बनकर लौटे।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (संस्कृत-हिन्दी, खण्ड 2), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), एकादश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान - बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-11-childhood-pastimes-and-move-to-vrindavana-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

